अमर भारती
एक उम्मीद
04 एडेशन, 06 संस्करण
: 310, पृष्ठ: 12, मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com शुक्रवार, 14 नवम्बर 2024 शक संवत् 1946, कार्तिक शुक्ल

दो दिवसीय पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर (अमर भारती)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका, मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा)जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं। इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक) तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

-316 गुरूवार, 14 नवंबर 2024 लखनऊ व एटा से प्रकशित R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4 मू

दो दिवसीय पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

रहस्य संदेश ब्यूरो

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका,मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा)जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं।

जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना।

खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है इसके प्रमुख लक्षण है इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक)

तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है डाक्टर कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष 6 महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी से फरवरी व जुलाई से अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान, उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय तथा श्री भगवान पाल, गौरव शुक्ला एवं शुभम यादव का कार्यक्रम सफल बनाने की विशेष सहयोग रहा।

दैनिक
उद्योग नगरी टाइम्स
E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com
सत्य ही कर्तव्य
वर्ष: 14 | अंक :299 | कानपुर, गुरुवार 14 नवम्बर 2024 | RNI UPHIN/2010/47220 | पृष्ठ :

दो दिवसीय पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

अनवर अशरफ

कानपुर यू एन टी । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका,मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा)जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं।जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना। खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है इसके प्रमुख लक्षण है इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक) तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है डाक्टर कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष 6 महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी से फरवरी व जुलाई से अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान, उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय तथा श्री भगवान पाल, गौरव शुक्ला एवं शुभम यादव का कार्यक्रम सफल बनाने की विशेष सहयोग रहा।

सत्य का असर समाचार पत्र

14,11,2024 jksingh hardoi gmil com मोबाइल फोन 9956834016

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका,मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा)जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं। जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना।खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है इसके प्रमुख लक्षण है इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक) तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है डाक्टर कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष 6 महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी से फरवरी व जुलाई से अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान, उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय तथा श्री भगवान पाल, गौरव शुक्ला एवं शुभम यादव का कार्यक्रम सफल बनाने की विशेष सहयोग रहा।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 143 कानपुर, गुरूवार 14 नवम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

दो दिवसीय पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका,मुंहपका रोग विषाणु जनित

रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा) जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं। जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना। खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है इसके प्रमुख लक्षण है इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक) तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है डाक्टर कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष 6 महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी से फरवरी व जुलाई से अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान, उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय तथा श्री भगवान पाल, गौरव शुक्ला एवं शुभम यादव का कार्यक्रम सफल बनाने की विशेष सहयोग रहा।

वर्ष : 16 अंक : 307 लखनऊ गुरुवार, 14 नवंबर 2024 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹4/-

मौसम

www.vishwavarta.com

विश्ववार्ता

सच्ची ख़बर, पैनी नज़र

ई-पेपर पढ़ने के लिए स्कैन करें हमारा क्यू आर कोड

नगर संस्करण

पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में चल रहे दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। इस प्रशिक्षण में किसानों को पशुओं के खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया।

प्रशिक्षण में बैठे अधिकारी

कृषि विज्ञान केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डा. शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका, मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है, जिसका प्रभाव गौवंशीय पशुओं में ज्यादा होता है। इस रोग से प्रभावित पशु के मुँह से अत्यधिक लार का टपकती है, पशु की जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना प्रारम्भ हो जाता है, ये छाले बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं।

डा. शशिकांत ने बताया कि खुरपका रोग में पशु के खुरों के बीच में घाव हो जाता है, जिसकी वजह से पशु लंगड़ा कर चलता है या चलना बंद कर देता है। इस रोग का विशेष उपचार नहीं है, फिरभी इसकी उचित देखभाल की जाती है, जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई करके, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है।

इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है।डा. शशि कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष दो बार छः महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी, फरवरी व जुलाई, अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए, जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके।

Read Only - Save a copy to edit.

कानपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सदैव सच के साथ...

समाज का साथी

4 || मूल्य 2:00/- रुपए || कानपुर || गुरूवार || 14 नवंबर 2024

बुल्डोजर न्याय: सुप्रीम कोर्ट ने कहा वर्षों का सपना होता है घर

बेकनगंज में पहली बार केस्को टीम की रेड, पाँच घरों में बिजली चोरी

दो दिवसीय पशु रोग प्रबंधन प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आज समापन हुआ।

जिसमें किसानों को खुरपका, मुंहपका रोग के विषय में बताया गया। केंद्र के पशु पालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने किसानों को बताया कि पशुओं में खुरपका,मुंहपका रोग विषाणु जनित रोग है जिसका प्रभाव गौ वंसीय पशुओं में ज्यादा होता है इस रोग से प्रभावित पशु के लिए मुँह से अत्यधिक लार का टपकना (रस्सी जैसा)जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं।

जीभ की सतह का निकल कर बाहर आ जाना एवं थूथनों पर छालों का उभरना।

खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु का लंगड़ा कर चलना या चलना बंद कर देता है इसके प्रमुख लक्षण है इस रोग का विशेष उपचार नहीं है फिरभी इनकी उचित देखभाल जिसके अंतर्गत लक्षणों के आधार पर उपचार एंटीबायोटिक, दर्द बुखार रोकने की दवाएं (अनालजेसिक) तथा मुंह के व खुरो के छाले इत्यादि की एंटीबायोटिक घोल से धुलाई, नरम व सुपाच्य भोजन की आपूर्ति व रोगी पशुओं एक जगह रखना इत्यादि किया जा सकता है/ इस रोग के प्रभावी रोकथाम के लिए खुरपका मुहपका की पलिवेलेंट वैक्सीन द्वारा टीकाकरण ही उचित उपाय है डाक्टर कांत ने बताया की इस रोग का टीका प्रति वर्ष 6 महीने के अंतराल पर मुख्यरूप से जनवरी से फरवरी व जुलाई से अगस्त में अवश्य लगवाना चाहिए जिससे इस रोग से अपने पशुओं को बचाया जा सके। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान, उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉक्टर राजेश राय तथा श्री भगवान पाल, गौरव शुक्ला एवं शुभम यादव का कार्यक्रम सफल बनाने की विशेष सहयोग रहा।